हिन्दी कहानी: एक परिचय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल प्रायः अंग्रेजी राज्य से सम्बन्धित किया जाता है। 1707 ई. में अन्तिम मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् भारतीय राजनीतिक परिस्थिति के पतनोन्मुख हो जाने के कारण अंग्रेजी राज्य की स्थापना हुई और 1757 ई. के बाद निश्चित रूप से इसका प्रसार होता गया। जिस समय भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य की स्थापना हुई, उस समय परम्परा-गत मुख्य साहित्यिक प्रवृत्ति ब्रजभाषा-कविता-विशेषतः रीति और श्रृंगार की ही कविता थी। कविगण प्राचीन तथा रूढ़िग्रस्त राधा-कृष्ण की लीलाओं और नायक-नायिकाओं के कल्पित ऐश्वर्य विलास में डूबे हुए थे। इन भावों की अभिव्यक्ति के लिए कवियों के पास उपयुक्त साधन थे। किन्तु अंग्रेज अपने साथ उपयोगी ज्ञान-विज्ञान और एक नवीन साधन-पद्धति लाये, जिसके लिए कविता उपयुक्त माध्यम नहीं थी। इसलिए एक ओर प्राचीन ब्रजभाषा-कविता का प्रचार बने रहने के साथ दूसरी ओर जीवन की नवीन परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार गद्य की आवश्यकता भी अनुभव हुई। उस समय हिन्दी में ब्रज-भाषा-गद्य, राजस्थानी-गद्य और खड़ीबोली गद्य की स्फुट और क्षीण धाराएं प्रचलित अवश्य थीं, किन्तु वे साहित्य का प्रधान अंग न बन पायीं। अंग्रेजी राज्य की स्थापना के अन्तर्गत ऐतिहासिक कारणों के फलस्वरूप और प्रेस जैसे वैज्ञानिक साधन की सहायता से खड़ीबोली गद्य की परम्परा को पुष्टता प्राप्त होती गई और थोड़े ही दिनों में वह हिन्दी साहित्य का प्रधान अंग बन गई।

वास्तव में अंग्रेज जिस आधुनिकता को अपने साथ लाये, वह खड़ीबोली गद्य के माध्यम द्वारा ही अभिव्यक्त हुई। यह आधुनिकता कलकत्ता सिविलाइजेशन और फोर्ट-विलियम कॉलेज में साकार हुई। इसलिए हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का प्रवर्त्तक निश्चय ही गद्य लेखक था। इसलिए आधुनिक काल को गद्य काल कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। अंग्रेजी राज्य के फलस्वरूप उत्पन्न नवीन शक्तियों और यूरोप से आये विचारों के प्रभाव से कविता के क्षेत्र में भी

Scanned by CamScanner

अभूतपूर्व परिवर्तन हुए पहले बाह्य, बाद में उसके अभ्यन्तर रूप में परिवर्तन हुए।

आधुनिककालीन हिन्दी साहित्य को भलीभाँति हृदयंगम करने के लिए उन नवीन परिस्थितियों, शक्तियों और भावों एवं विचारों को समझना अत्यन्त आवश्यक है, जो उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों में उत्पन्न हुए है। अंग्रेजी राज्य में नवीन शिक्षा और वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रचार के फलस्वरूप देश में क्रान्तिकारी, सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तन हुए, जिनके फलस्वरूप विविध प्रकार के आन्दोलनों से जीवन में जागरण उत्पन्न हुआ। भारतवासी अपने आलस्यमय जीवन को छोड़कर आगे बढ़ा। मध्ययुगीन पतन के बाद इस नवजागरण ने देश की आत्म-गरिमा को फिर से सजीव बना दिया। पश्चिम का आघात पाकर एक बार तो भारतवासी ने अपने को सम्भाला किन्तु शीघ्र ही उन्होंने अपने पैर जमाये। परिणाम यह हुआ कि पूर्व और पश्चिम का संघर्ष छिड़ गया, जो आधुनिक काल में उन्नीसवीं शताब्दी से ही परिलक्षित होता है।

हिन्दी साहित्य में उन्नीसवीं शताब्दी में नवयुग की आवश्यकता के साथ विचारों में एक प्रकार का स्वतंत्र से मनोभावों का जन्म हुआ और भाषा के शब्दकोष में वृद्धि हुई। गद्य में अनेक प्रकार का विकास हुआ। कवियों ने परम्परागत और रूढ़िग्रस्त विचारों को छोड़कर दुनिया को नयी आंखो से देखा।

भारतेन्दु-पूर्व काल

साहित्यिक दृष्टि से आधुनिक काल की रूपरेखा इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है-सर्वप्रथम हम उसके अन्तर्गत उन्नीसवीं और बीसवीं दोनों शताब्दियों की गणना करते हैं। आधुनिक काल अर्थात् उन्नीसवीं बीसवीं शताब्दी। उन्नीसवी शताब्दी को फिर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध में ब्रजभाषा काव्य की प्रधानता थी। गद्य के क्षेत्र में खड़ी बोली गद्य की क्रमिक परम्परा की स्थापना इसी समय होती है। लल्लूलाल, सदल मिश्र और इंशा अल्ला खाँ की रचनाओं का प्रारम्भ, ईसाई मिशनरियों की धार्मिक ग्रन्थों की रचनाएँ, समाचार पत्रों का प्रकाशन और शिक्षा संबंधी इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, अर्थशास्त्र, यात्रावर्णन, राजनीति, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र आदि विविध विषयों का अनुवाद तथा निर्माण इस समय की प्रमुख विशेषताएँ हैं। उस समय खड़ीबोली गद्य ने अनेक अंग्रेजी शब्दों को हजम कर लिया था किन्तु खड़ीबोली गद्य में अभी ललित साहित्य की रचना नहीं हुई थी।

भारतेन्दु युग (प्रथम उत्थान) या गद्य का नवजागरण काल

ललित साहित्य की रचना उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रारम्भ हुई थी।

Scanned by CamScanner

हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत यह भारतेन्दु काल के नाम से प्रसिद्ध है। जिसका समय प्रायः 1850 ई. से 1900 ई. तक माना जाता है। ललित साहित्य की रचना की दृष्टि से आधुनिकता सर्वप्रथम इसी काल में दृष्टिगोचर होती है। इस काल में गद्य के अन्तर्गत नाटक, उपन्यास, निबन्ध, समालोचना, जीवनी आदि साहित्य रूपों की रचनाएँ हुई और समाचार पत्र-कला की शैली तीव्र गति के साथ आगे बढ़ी। काव्य क्षेत्र में यद्यपि ब्रजभाषा-काव्य की प्रधानता बनी हुई थीं, किन्तु अब उसका एकाधिपत्य मिटता जा रहा था और खड़ीबोली उसका स्थान ग्रहण करने लगी थी। भारतेन्दु काल में अनेक समस्यापूर्ण परिस्थितियों के फलस्वरूप उत्पन्न आन्दोलनों में सुधार एवं प्रगति की प्रबल भावना थी और राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का जन्म (1885 ई.) एक महत्वपूर्ण घटना थी। इन आन्दोलनों का प्रभाव खड़ीबोली साहित्य तथा ब्रजभाषा-साहित्य पर दृष्टिगोचर होता है और साहित्य का जीवन के साथ सम्पर्क स्थापित होता है।

द्विवेदी युग (द्वितीय उत्थान) या गद्य का परिमार्जनकाल

महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन भार ग्रहण किये जाने के समय से प्रथम महायुद्ध तक के आधुनिक काल को द्विवेदी युग माना जाता है। हिन्दी कहानी इसी युग की देन है और विविध प्रकार की गद्यशैलियों के जन्म के साथ-साथ द्विवेदी युग खड़ीबोली के परिमार्जन का युग है। इस समय गद्य और पद्य दोनों की भाषा खड़ीबोली बनी।

आधुनिक गद्य साहित्य

आधुनिक काल में पद्य के साथ ही साथ गद्य का विकास हुआ। लेकिन गद्य के विकास से पद्य में कोई बाधा नहीं हुई। गद्य का प्रारम्भ और बहुमुखी विकास इस युग की एक प्रमुख विशेषता है। आधुनिक काल में गद्य-साहित्य के विविध रूप इस प्रकार के हैं- (1) नाटक, (2) उपन्यास, (3) कहानी, (4) एकांकी, (5) निबन्ध, (6) समालोचना, (7) गद्य-काव्य, (8) रेखाचित्र, (9) संस्मरण, (10) जीवन चरित, (11) आत्मकथात्मक गद्य (12) रिपोर्ताज और (13) आलेखन इत्यादि।

आधुनिक काल में भाषा में एक जोरदार परिवर्तन हुआ। यथार्थ की प्रवृत्ति गद्य साहित्य तथा खड़ीबोली भाषा की सहायता से हुई। इस प्रकार विकास के साथ-साथ खड़ी बोली ही राष्ट्र की प्रमुख भाषा बनी। इसके बाद राष्ट्रभाषा भी बन गई। आजकल इसके वैज्ञानिक साहित्य का विकास बहुत गति के साथ हो रहा है। खड़ीबोली का क्षेत्र व्यापक होने के साथ-साथ अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत तथा

Scanned by CamScanner

अन्य प्रांतीय भाषाओं के शब्दों का समावेश भी हुआ।

आधुनिक काल को हम हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कह सकते हैं। यह काल बहुत विस्तृत है और विविध मुखी विकास की व्यंजना करता है। इस काल के साहित्य में राजनीतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक आदि विविध विषयों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, तथा साहित्यिक शैली में भी अनेक भावी विकास हुआ। इसलिए आलोचकों का कहना है कि यह हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है।

Scanned by CamScanner